ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

OPEN ACCESS PEER REVIEW

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n3.41

केदारनाथ सिंह: बिंब विधान के कवि

डॉ आभा गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर-हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी-वाराणसी

सारांश

'बिम्ब' अंग्रेजी के इमेज का हिंदी रूपांतरण है बिंब विधान हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसमें कवि अपनी कविताओं में बिम्बों का प्रयोग करके भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं। बिंब विधान के माध्यम से कविता अधिक आकर्षक और रोचक बन जाती है। पश्चिम में अंग्रेजी कवि टी.ई. ह्यूम के द्वारा एक काव्य आंदोलन के रूप में स्थापित हुआ और बिंबवाद की इस नवीन अवधारणा से प्रभावित होकर इंग्लैंड और अमेरिका के कुछ कवियों जैसे एजरा पाउंड और एल्डिंगटन इत्यादि ने 20वीं सदी के पूर्वार्ध में बिम्बवाद के सिद्धांतों को अपनाया और उनका प्रतिपादन किया बिम्ब का प्रयोग साहित्य में आरंभ से होता रहा है। प्रतीकों के विपरीत बिम्ब इंद्रिय संवेद्य होते हैं अर्थात उनकी अनुभूति किसी न किसी इंद्रिय से जुड़ी रहती है इसीलिए साहित्य में हमें दृश्य बिंबों के साथ-साथ श्रव्य,घ्राण और स्पर्श बिंबों का प्रयोग भी मिलता है

मूल शब्द: **इमेज, बिम्ब, इंद्रिय, प्रतीक, श्रव्य, स्पर्श, घ्राण, चित्र, प्रतिच्छाया या मूर्त**

बिम्ब योजना कविता में एक महत्वपूर्ण तत्व है जो कि कवि की कल्पना और संवेदना को व्यक्त करने में मदद करती है। बिम्ब शब्द अंग्रेजी के 'इमेज'शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। संस्कृत में प्रचलित छाया प्रतिच्छाया शब्द बिम्ब के संदर्भ में प्रयुक्त किए जाते हैं। "साहित्य में 'बिम्ब' व्यापक शब्द है। 'बिम्ब'साहित्य और

मनोविज्ञान दोनों में ही व्याप्त है। मनोविज्ञान में इस शब्द का अर्थ है मानसिक पुनर्निर्माण,एक स्मृति, अतीत की एक संवेदनात्मक अनुभूति। वह स्वाद परक, प्राण परक, स्पर्श परक भी हो सकता है या फिर वह केवल मात्र एक विचार, एक मानसिक घटना, एक अलंकार अथवा किन्हीं दो वस्तुओं की तुलनात्मक इकाई भी हो सकता है।"(१)

मन में जब कोई भी विचार आता है या किसी चीज या घटना के बारे में कल्पना करते हैं तो मन के उपचेतन या अवचेतन में कई प्रकार के चित्र उभरते हैं, मिटते हैं, लगता है यह वस्तु ऐसी नहीं वैसी होगी। इन चित्रों की श्रृंखला से बनती जाती है। बिम्ब जीवन की किसी भी प्रक्रिया से दूर नहीं है, उसकी मौजूदगी प्रत्येक जगह है। शहर की अपेक्षा गांव के व्यक्तियों, जो प्राकृतिक परिवेश में रहते हैं की भाषा में बिंबो की अधिकता रहती है। बिना किसी चित्र (बिम्ब)प्रतीक तथा रूपक के कवि अपने अभिव्यक्ति सही ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता है।कविता के निर्माण में इन सभी का सहयोग रहता है। विको ने इसे अच्छी तरह स्पष्ट किया है-"कविता मानव मन की पहली प्रतिक्रिया है। मनुष्य प्रवृत्ति से ही व्यापक नियमों तक पहुंचने से पहले छोटे-छोटे कल्पना चित्रों के पास पहुंच जाता है। इससे पहले की स्पष्टत: यथार्थ को प्रतिबिंबित करें, वह अपनी उलझी हुई और अस्पष्ट चेतना से वस्तु को ग्रहण करता है। इससे पहले की स्पष्ट उच्चारण करे, वह केवल कुछ संकेतों और स्पष्ट ध्वनियों से काम लेता है। इससे पहले कि वह गद्य बोले, उसके मुख से निसर्गत: कविता निकलती है। इससे पहले की पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करे वह रूपकों का प्रयोग करता है और रूपक का प्रयोग उसके लिए उतना ही अधिक स्वाभाविक होता है, जितनी स्वाभाविक कोई भी वस्तु हो सकती है।"२

विभिन्न विचारकों ने अपनी अपनी परिभाषाओं के माध्यम से बिम्ब को अलग-अलग ढंग से समझने समझाने की कोशिश की है।

"बिम्ब वह शब्द चित्र है जो कल्पना के द्वारा ऐन्द्रिए अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।"३

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार-"काव्य में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिंबग्रहण अपेक्षित होता है। बिम्ब ग्रहण वहीं हो सकता है जहां कवि अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा वस्तुओं के अंग प्रत्यंग वर्ण, आकृति तथा उसके आसपास की परिस्थिति का परस्पर संश्लिष्ट विवरण देता है।"४

आचार्य नगेंद्र के अनुसार-"बम एक प्रकार का चित्र है जो किसी पदार्थ के साथ विभिन्न इंद्रियों के सन्निकर्ष से प्रमाता के चित्र में उद्बुद्ध हो जाता है।"५

ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

डॉ केदारनाथ सिंह के अनुसार-"बिना चित्रों प्रतीकों रूपकों और बिम्बों की सहायता मानव अभिव्यक्ति का अस्तित्व और असंभव है।"६

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इमेज का स्वरूप इस प्रकार चित्रित किया गया है-

"१-किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के भी रूप की कृत्रिम अनुकृति अथवा किसी बाह्य वास्तु या व्यक्ति का चित्रण या प्रतिच्छाया, प्रतिमा, चित्र आदि।

२-किसी वस्तु की चाक्षुष प्रतिमूर्ति।

३-किसी वस्तु का मानसिक प्रतिरूप।

४-प्रतिकृति, प्रतीक, प्रतिबिंब।

५-चाक्षुष का आलंकारिक चित्रण।"७

पाश्चात्य और भारतीय विचारकों के बिम्ब संबंधी मान्यताओं पर दृष्टिपात करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि बिम्ब चराचर जीवन और जगत की अनुभूतियों की ऐसी प्रतिकृति है जो कल्पना के प्रत्यक्ष तथा विभिन्न इंद्रियों के अप्रत्यक्ष सामीप्य के सादृश्य से सहृदय के चित्र में जागृत होती है । अनुभूति, भाव,आवेग, ऐंद्रिकता आदि बिम्ब की प्रधान विशेषताएं हैं ।

काव्य में जो बिम्ब प्रयुक्त होते हैं वे बिम्ब कवि की भावना और कल्पना से समृद्ध होते हैं।सामान्य शब्द काव्य- बिम्ब के रूप में उतने सार्थक नहीं होते हैं। कवियों को शब्दों को नए बिम्बों के रूप में परिवर्तित करना पड़ता है। काव्य बिम्ब में जब तक भाव का स्पर्श नहीं होगा, उसका अलग कोई अस्तित्व ही नहीं होगा क्योंकि सामान्य बिम्ब की अपेक्षा काव्य बिम्ब सारगर्भित होता है। बिम्ब को ऐंद्रिकता के साथ जोड़ा गया है अत: बिम्ब में ऐन्द्रिय आधार मुख्य हैं- ऐन्द्रिय माध्यम के आधार के अंतर्गत बिम्ब को पांच भागों में बांटा गया है-१ दृश्य,२-श्रव्य,३- स्पर्श,४- ग्रहण,५-आस्वाद।

केदारनाथ सिंह की काव्य भाषा सृजनशीलता और बिंब विधान के प्रति विशेष जागरुक एवं आग्रही है।तीसरा सप्तक में उनका वक्तव्य है-" कविता में मैं सबसे अधिक ध्यान देता हूं बिंब विधान पर बिंब विधान का संबंध जितना काव्य की विषय वस्तु से होता है उतना ही उसके रूप से भी। विषय को वह मूर्त एवं ग्राह्य बनाता है।रूप को संक्षिप्त और दीप्त।"८ मानवीय संस्कृति में बिम्ब की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-" मानव संस्कृति के विकास में कवि का योग दो प्रकार से होता है-नवीन परिस्थितियों के तल में अत: सलिला की तरह बहती हुई अननुभूत लय से आविष्कार के रूप में तथा अछूते बिंबों की कलात्मक योजना के रूप में। पहले में

ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

कवि का व्यक्तित्व मुखर होता है, दूसरे में वस्तु जगत के साथ उसका अधिकाधिक संबंध। लय के आविष्कार के द्वारा वह मानवीय संवेदना को व्यापक बनाता है और नवीन बिंबो के परिचय से हमारी ऐंद्रिय चेतना को वृहत्तर यथार्थ के साथ संपृक्त करता है।"९ केदारनाथ सिंह की काव्य भाषा में दृश्य बिम्ब का सहज प्रयोग मिलता है इनके बिम्ब जन-जीवन, प्रकृति आदि विभिन्न क्षेत्रों से एकत्र किए गए हैं। केदारनाथ जी की विशेषता है कि वह अमूर्त भावों- विचारों को बिंबो में मूर्त करने का प्रयास करते हैं-

"आज भी खड़ा है वह
मेरे दरवाजे पर मेरी प्रतीक्षा में
बड़े-बड़े डैनों वाला कमरा का दानव"१०

× × ×

"इस अनागत को करें क्या
जो कि अक्सर
बिना सोचे, बिना जाने
सड़क पर चलते अचानक दीख जाता है।"११

यहां 'दानव' और 'अनागत'- दोनों ही अमूर्त हैं किंतु कवि की दृष्टि इतनी पैनी है कि वह अपने आसपास के वातावरण में उनकी आहट को महसूस करते हैं।

केदार जी के यहां रंग युक्त बिम्ब भी प्रयुक्त किए गए हैं यह रंग सुंदर,सौम्य एवं मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करने वाले हैं-

"धूप चिड़चिड़ी, हवा बेहया, दिन मटमैला
मौसम पर रंग चढ़ा फागुनी, शिशिर टूटते
गंध स्वरों से, गुड़ की गमक हवा को सरसा
जाती जैसे पूस माह में
नदियां होंगी।"१२।

केदारनाथ सिंह की कविताओं में गँवई चीजों और भावों के लिए बड़ा स्थान है। वे ठेठ देशी और गँवई मिज़ाज के कवि भी हैं। उनकी कविताओं में भूमंडलीकरण के कारण उपजी चिन्ताएँ एक छोर पर हैं तो दूसरी ओर उनका गाँव, नदियाँ, पेड़-पौधे, अनाज के दाने, पेड़ों के तने की लकड़ियाँ तक बोल उठती हैं। जिस शहर को

ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

वे देखते हैं, बड़ी सूक्ष्मता से देखते हैं, शहर उनको कैसे बदल रहा, उसका सुंदर विश्लेषण वहाँ देखने को मिलता है। उनके यहाँ माँझी का पुल है तो बंसी मल्लाह भी हैं, झुम्मन और नूर मियाँ हैं तो हल के साथ गपबाजी करते हुए लोग भी। उनकी कविताओं में दूर गाँव के कछार नज़र आते हैं, अनाजों के वे खेत हैं जहाँ पर वे पहले रहे, खेतों की मेड़ें हैं लेकिन बाद में वे शहर आ गए लेकिन वे यादें, उनकी स्मृतियाँ धुंधली हुई सी उनके ज़ेहन में साथ-साथ चलती रहीं। उनके काव्य का फलक तो बहुत बड़ा है लेकिन इन सबको रचने के लिए वे अपने शिल्प में जिस बिम्ब को ले आते हैं, वे एक से एक शानदार बिम्ब हैं। बिम्ब भी केवल एक जैसे नहीं, अपने स्वरूप में वैविध्य लिए हुए। उनके बिम्ब देखिए-

एक बच्चा जागता है
और घने कोहरे में पिता की चाय के लिए।
दूध ख़रीदने।
नुक्कड़ की दुकान तक अकेले चला जाता है।

यहाँ बस एक दृश्य है, इसे पढ़ते हुए ऐसा लगता है, बच्चा जाते-जाते मानो हमारी आँखों से अभी ओझल हो जाएगा। यह इस कवि की ख़ूबसूरती है। जिस तरह के बिम्ब ये अपनी कविताओं में रचते हैं, वे बिम्ब इनकी अपनी विशेषता हैं।

डॉ रतन कुमार पाण्डेय का कथन दृष्टव्य है-" कवि केदारनाथ सिंह उसे रचना धर्मी का नाम है जो देखते, सुनते,स्पर्श करते हुए अपनी इंद्रियों को सचेत रखता है। एक बड़े रचनाकार का दायित्व है वह वस्तुओं की ऊष्मा और गंध की परख करें। केदारनाथ सिंह अवलोकन करते हैं तथा संगीत पारखी की भांति चीजों को परखते हुए कभी मूर्त और कभी अमूर्त धरातल पर बिम्ब रचना में पिल पढ़ते हैं।उनके अमूर्तन बिम्ब की एक झलक देखिए-

"एक दिन भक् से
मूंगा मोती
हल्दी प्याज
कबीर निराला
स्वर्ग नरक
झींगुर कुहासा

सभी के आशय स्पष्ट हो जाएंगे

जैसे धूप

खपरैलों पर

जाते-जाते यकायक

स्पष्ट हो जाती है।"

निष्कर्षत

कवि केदारनाथ सिंह की कविताओं में बिम्ब नहीं बल्कि बिंबो में कविता जीवित है।इन्होंने बिंबो के माध्यम से सामाजिक एवं मानवीय संदर्भों को उद्घाटित किया है। उनकी कविताओं में बिंबो का चयन प्रकृति तथा विशेष कर लोक जीवन से लिए गए हैं। लोक चेतना से संपृक्त केदारनाथ सिंह की बिम्ब रचना सहज एवं संवेद्य है।

संदर्भ सूची

१-केदारनाथ सिंह- कल्पना और छायावाद, पृष्ठ-७८

२-वही-पृष्ठ -७९

३-केदारनाथ सिंह-आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान, पृष्ठ-२३

४-आचार्य रामचंद्र शुक्ल- चिंतामणि- भाग 1,पृष्ठ-१४५

५-आचार्य नगेंद्र-हिंदी ध्वन्यालोक, पृष्ठ-४५

६-केदारनाथ सिंह-तीसरा सप्तक, पृष्ठ-२८

७-ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, पृष्ठ-९५

८-तीसरा सप्तक, पृष्ठ- १२२

९-वही, पृष्ठ-१२३

१०-केदारनाथ सिंह- प्रतिनिधि कविताएं (संपादक परमानंद श्रीवास्तव), पृष्ठ- ९७

११-वही ,पृष्ठ- ९६

१२-अज्ञेय(संपादक)तीसरा सप्तक ,पृष्ठ-१२

१३-अकाल में सारस , पृष्ठ -८३